Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
UGC Approved Journal No. 63726
Impact Factor:3.021 website: www.researchguru.net
Volume-11,Issue-3,December-2017

महात्मा गांधी के विचारों में समग्र ग्राम सेवा

विवेक पाठक
पीएच.डी गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा
Vivek.pathak371@gmail.com

सारांश - किसी भी देश का सम्पूर्ण विकास तब तक नहीं हो सकता हैं जब तक उस देश में बसने वाले गाँवों का विकास न हो। भारत एक कृषि प्रधान देश रहा हैं और देश की अधिकांश जनसंख्या गाँवों में बसती हैं। वर्तमान समय में भारत में 7 लाख से भी अधिक गाँव हैं लेकिन देश के बटवारें के बाद इनकी संख्या में निश्चित ही कमी हैं। एक अनुमान के अनुसार भारत की जनसंख्या का 70 से 80 % गाँवों में लोगों का निवास रहता हैं। आजादी के यह आभास होने लगा कि ग्राम समुदायाओं में तेज़ी से परिवर्तन हो रहा हैं। ऐसा इसलिए कि आज़ादी के बाद से ही देश में आर्थिक विकास के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाये गए हैं। जिन्होंने कुछ ही वर्षों में ग्रामीण भारत का स्वरूप ही बदल दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में इन्हीं मुद्दों पर महात्मा गांधी के विचारों को दर्शाने का प्रयास किया गया हैं।

मुख्य शब्द - महात्मा गांधी, ग्राम, समग्र-ग्राम सेवा

शोध पत्र का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से महात्मा गांधी के विचारों में समग्र ग्रामीण परिवेश को समझने का प्रयास किया गया हैं।

शोध समस्या

प्रस्तुत शोध पत्र गांधी के विचारों में समग्र ग्राम सेवा पर आधारित हैं, जिसके केंद्र में सम्पूर्ण गाँव का विकास कैसे हो पर आधारित हैं।

शोध पत्र की सीमा

- ✓ ग्रामीण विकास
- ✓ स्वदेशी संकल्पना
- ✓ सामूहिक स्वच्छता

सामग्री संकलन एवं साहित्य समीक्षा

शोध पत्र को पूरा करने के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोत को शामिल किया गया हैं। जिसमें गांधी जी के सम्पूर्ण पत्रों का संकलन जिसे "सम्पूर्ण गांधी खंड" के नाम से जाना जाता है, को शामिल करते हुए महात्मा गांधी हेरिटेज पोर्टल पर उपलब्ध गांधी के द्वारा प्रकाशित "हरिजन" को शामिल किया गया है।

महात्मा गांधी के विचारों में समग्र ग्राम सेवा

महात्मा गांधी का विचार है कि सच्चा भारत 7 लाख गाँवों में बसता है। यदि भारतीय सभ्यता को एक स्थायी विश्व व्यवस्था के निर्माण में अपना पूरा योगदान करना है तो गाँव में बसने वाली विशाल जनसंख्या को फिर से जीना सिखाना होगा[i] और फिर जीना सीखने के लिए हमारे गाँव को तीन बीमारियों के चंगुल से मुक्त होना होगा,वे हैं : (1) सामूहिक साफ-सफाई का अभाव (2) आहार की कमी (3) जड़ता । इन सबका का प्रमुख कारण महात्मा गांधी ग्रामीण परिवेश में रहने वाले गाँव के लोगों को ही दोषी मानते हुए आगे कहते हैं कि ग्रामवासियों को अपने कल्याण में खुद रुचि नहीं हैं। वे साफ-सफाई के आधुनिक तरीकों को अनदेखा करते जा रहे है। वे अपने खेत में किए गए काम के अलावा और कोई काम नहीं करना चाहते। यह समस्या काफी गंभीर है लेकिन हमें इससे घबराना नहीं चाहिए बल्कि लगन और मेहनत के बल पर उपरोक्त समस्या से मुक्ति पाया जा सकता हैं। सबसे पहले तो हम सभी को अन्य लोगों के साथ धीरज के साथ पेश आना चाहिए ताकि समस्या के समाधान को जनता के बीच में आसानी से प्रसार किया जा सके। क्योंकि हम खुद ही इन मामलों में नौसिखिये से ज्यादा कुछ नहीं हैं। हमे पुरानी बीमारियों का इलाज करना है अगर सभी धैर्य से कार्य करेगे तो बड़ी-बड़ी से समस्या पर विजय पा सकते है। हम रोगों पर विजय तभी पा सकते है जब हम खुद रोगग्रस्त व्यक्ति अंतिम समय तक छोड़ करके नहीं जाते हैं।[ii] समग्र-ग्राम सेवा का भाव गाँव के सभी निवासियों को परिचय होना चाहिए और जितना बन पड़े उतनी सेवा एक दूसरे कि करनी चाहिए ताकि सहयोग-परस्पर कि भावना सभी के अंदर बनी रहे। इससे यह होगा कि वे सभी एक दूसरे कि सहायता किस प्रकार से कर सकते है और जब किसी को सामग्रियों की जरूरत होगी तब सभी मिल करके उसे सामग्री उपलब्ध कराएगा। सभी ग्रामवासी कम से कम इतना तो शिक्षा ग्रहण कर लेगे की वह एक दूसरे के बच्चे को पढ़ा सकेगे और शिक्षा की ज्योति को एक दूसरे में बाटने का काम करेगे। जब प्रत्येक ग्रामवासी शिक्षित हो जाएगा तो वह दूसरों को भी स्वास्थ्य रक्षा, साफ-सफाई के प्रति जागरूक करने

का कार्य करेगा। महात्मा गांधी भी कहते हैं की यदि कोई व्यक्ति मेरे पास आ करके कहता है कि साफ-सफाई के लिए आप एक मेहतर कि व्यवस्था कर दीजिये तो मैं उससे कहूँगा कि मैं आप का मेहतर हूँ और इस काम की शिक्षा मैं दूंगा। समग्र ग्राम-सेवा की मेरी तो यही अवधारणा है। गांधी जी का मानना हैं कि सच्चा ज्ञान पैसे में निहित न हो करके ज्ञान में मौजूद होता हैं। सच्चा ज्ञान ही मनुष्य को नैतिक प्रतिष्ठा और नैतिक शक्ति प्रदान करता है। ऐसे व्यक्ति से हर कोई परामर्श लेना चाहेगा।[iii]सभी गाँवों का सर्वेक्षण कराया जाएगा और उन सभी वस्तुओ की सूची तैयार कराई जाएगी जो कम-से-कम या किसी तरह की सहायता के बिना स्थानीय रूप से तैयार की जा सकती हैं जिसे गाँव में इस्तेमाल किया जा सकेगा या जिन्हें बाहर बेचा जा सकेगा। उदारहण के लिए कोल्हू से पेरा गया तेल और खली, हाथ से कुटे चावल, ताड़, गुड, शहद, चटाइयां और हाथ के द्वारा बनाया गया कागज एवं साबुन आदि। यदि स्वदेशी वस्तुओ के निर्माण पर ध्यान दिया जाएगा तो निश्चित ही नवजीवन का संचार होने के साथ-साथ भारत के शहरों और कस्बों के लिए जरूरत के समान को भी पूरा किया जा सकेगा। ग्रामवासियों को अपने कौशल का निर्माण इतना उच्चा कर लेना चाहिए की जब उनके द्वारा बनाई गई कोई भी वस्तु गाँव से बाहर जाये तो हाथों-हाथ बिक जाएं। इस प्रकार गाँव का पूर्ण विकास हो जाएगा तो वहां ऊंचे दर्जे के कौशल और कलात्मक प्रतिभा वालों की कोई कमी नहीं रहेगी। तब गाँव के अपने कवि भी होंगे, कलाकार होंगे, वास्तुशिल्पी होंगे और अनुसंधानकर्ता भी होंगे। यदि संक्षेप में कहे तो वह सब गाँव में मौजूद होंगा जो आज नदारद हो रहे हैं। वहीं कल सुंदर-सुंदर वाटिकाओं का रूप लेंगे जिनमें इतनी प्रखर बुद्धि के लोग निवास करेंगे जिन्हें कोई धोखा नहीं दे सकेगा।[iv]चूंकि गाँवों के आर्थिक मजबूती का काम आहार विषयक सुधारों से शुरू किया जा सकता हैं इसलिए इस बात का पता लगाना जरूरी है कि सादे-से-सादे और सस्ते आहार सामाग्री कौन से हैं। जिसे प्राप्त करके ग्रामवासी अपने खोए हुए स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त कर सकते हैं। गांधी जी कहते हैं कि यदि सभी ग्रामवासी अपने आहार में हरेपन को शामिल कर ले तो कोई शक नहीं हैं कि वे अनेक बीमारियों से मुक्ति पा सकते हैं। ग्रामवासियों के आहार में जो विटामिन की कमी है ताजे हरेपन से दूर हो सकती है।[v]अगर प्रत्येक गाँव के घरों में बिजली की व्यवस्था हो जाए तो मुझे ग्रामवासियों के द्वारा अपनी मशीन और औजार बिजली से चलाए जाने पर कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन बिजली घरों पर स्वामित्व या तो राज्य के पास होना चाहिए या ग्राम समुदायों के पास जैसा कि इस समय चरागाहों के विषय में है। लेकिन जहां न बिजली है और न ही मशिनें हैं वहां के लोग इसके अभाव में क्या करेंगे।[vi]मैं हजारों गाँवों में बड़ी संख्या में इन मशीनों को लोभ-लालच की निशानी के अलावा कुछ नहीं मानता हूँ। क्या गरीब आदमी के पेट मार करके अपनी जेब को भरना कहाँ तक सही है ऐसी हर मशीन हजारों हथचक्कियों को बेकार कर देती है जिससे हजारों घरेलू औरतें बेरोजगार हो जाती है और चक्कियां बनाने वाले कारीगरों का धंधा चौपट हो जाता है। इसलिए यह गाँव के सभी कलाओं को पाने चपेट मे ले लेगी। ऐसा इसलिए जिन हजारों गाँवों में

शक्तिचालित आटा चक्कियाँ लग गई है वहां मुंह अंधरे सुनाई देने वाला हाथक्कियों का मधुर संगीत अब सदा के लिए सो गया है।

निष्कर्ष

महात्मा गांधी का विचार था कि किसी भी देश का विकास तब तक नहीं हो सकता है जब तक देश में बसने वाले 7 लाख गाँवों का विकास नहीं हो जाता है और इन गाँवों का विकास बड़ी-बड़ी फैक्ट्रियाँ लगाने से नहीं बल्कि स्वदेशी कार्यों को बढ़ाने से ही हो सकता हैं। जब तक मानव अपनी श्रम शक्ति पर विश्वास नहीं करेगा और स्वालंबी के साथ-साथ उसके अंदर सहयोग कि भावना जब तक जागृत नहीं होगी गाँव क्या व्यक्ति के कौशल का ही विकास नहीं हो पाएगा। जब व्यक्ति के अंदर कौशल का विकास नहीं होगा तब तक देश-से-देश और सभ्यता-से सभ्यता का निर्माण नहीं होगा। इसलिय महात्मा गांधी के समग्र-ग्राम सेवा के माध्यम से नष्ट हो रहे ग्राम सभ्यता-संस्कृति को पुनः प्राप्त कर सकते हैं।

संदर्भ

[i] हरिजन, 27 अप्रैल 1947 http://www.hindi.mkgandhi.org/village_main.htm

[ii] हरिजन, 16 मई 1936 http://www.hindi.mkgandhi.org/village_main.htm

[iii] हरिजन, 17 मार्च 1946 http://www.hindi.mkgandhi.org/village_main.htm

[iv] हरिजन, 10 नवंबर 1946 http://www.hindi.mkgandhi.org/village_main.htm

[v] हरिजन, 15 फरवरी 1935 http://www.hindi.mkgandhi.org/village_main.htm

[vi] हरिजन, 22 जून 1935 http://www.hindi.mkgandhi.org/village_main.htm